युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 19 अंक 16 कुल पृष्ठ-8 20 से 26 जून, 2024 दयानन्दाब्द 199 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 वै. कृ.-09

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्म जयन्ती वर्ष एवं स्वामी इन्द्रवेश जी की 18वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर का आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न

स्वामी इन्द्रवेश जी की स्मृति में डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी को विद्वत् सम्मान से किया गया सम्मानित

वरिष्ठ आर्य संन्यासी स्वामी रामवेश जी का हुआ अभिनन्दन

विदुषी आर्य भजनोपदेशिका बहन कल्याणी आर्या की गईं सम्मानित

श्री सज्जन सिंह राठी, मा. अजीतपाल, श्री धर्मेन्द्र कुमार एवं श्री अवनीश आर्य को मिला कार्यकर्ता सम्मान

श्रीमती सुषमा आर्या, श्रीमती सुखदा शास्त्री, श्रीमती शालिनी गुप्ता एवं कुमारी एकता आर्या को किया गया नारी शक्ति सम्मान से विभूषित

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्म जयंती वर्ष तथा स्वामी इंद्रवेश जी महाराज की 18वीं पुण्यतिथि के अवसर पर दिनांक 6 से 12 जून, 2024 तक स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली, रोहतक, हरियाणा के परिसर में राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर का शुभारंभ बृहस्पतिवार 6 जून, 2024 को हुआ। इस शिविर का उद्घाटन सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी, समाज सेवी एवं उद्योगपति श्री जगमोहन मित्तल, समाज सेवी श्री सुनील देशवाल, श्री सुभाष गुप्ता, श्री अर्जुन सिंह ने ध्वजारोहण करके किया। शिविर के उद्घाटन सत्र में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री स्वामी आदित्यवेश जी, श्री राजबीर वशिष्ठ, श्री वीरेन्द्र कुण्डू, स्वामी मुक्तिवेश, श्री इन्द्रजीत शास्त्री, श्री अजय आर्य, आचार्य ऋषिराज शास्त्री आदि उपस्थित रहे।

स्वामी इंद्रवेश आर्य राष्ट्र के स्वप्न द्रष्टा थे – स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज के युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवती परिषद्, बेटी बचाओ अभियान एवं युवा निर्माण अभियान के संयुक्त तत्वावधान में लगाए गये शिविर में स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि शिक्षित एवं संस्कारित नारी ही मानव का निर्माण कर सकती है। उन्होंने कहा कि नारी शक्ति की गरिमा को सुरक्षित रखने के लिए आर्य वीरांगनाओं को राष्ट्र निर्माण के लिए संकल्प लेकर आगे बढ़ना होगा। इसलिए सरकार को नारी शिक्षा पर विशेष बल देना चाहिए। यदि बेटियां शिक्षित एवं संस्कारित होंगी तो समाज संस्कारित होगा। स्वामी जी ने शिविर में शामिल लगभग पांच सौ बेटियों को जीवन में संस्कार, चरित्र, ईमानदारी, नैतिकता, राष्ट्रभक्ति ईश्वर भक्ति को अपनाने का संकल्प दिलाया। स्वामी आर्यवेश जी ने वेदों के आधार पर सोलह संस्कारों की व्याख्या की। उन्होंने बताया कि ऋषि दयानन्द जी द्वारा रचित ऐतिहासिक वैज्ञानिक दृष्टि से विशेष पुस्तक संस्कार विधि में इसका वर्णन किया गया है। इनमें यज्ञोपवीत संस्कार सबसे महत्वपूर्ण है। यज्ञोपवीत के तीन तार हमें अपने माता, पिता एवं गुरु के ऋण से उनकी सेवा के माध्यम से उऋण होने की प्रेरणा देते हैं। उन्होंने बताया कि महिलाओं को यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने दिलाया है। हम सबको वेद आधारित इस संस्कार को अपनाना चाहिए।

बेटियों को संस्कारित करना पवित्र कार्य है – जगमोहन मित्तल

समाजसेवी श्री जगमोहन मित्तल ने कहा कि आज बेटियां समाज को नई दिशा देने का काम कर रही हैं। ध्यान एवं योग उनको आत्मिक तथा शारीरिक रूप से और ज्यादा सक्षम बनायेंगे।

आर्य राष्ट्र निर्माण को साकार करना हमारा लक्ष्य– स्वामी आदित्यवेश

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री स्वामी आदित्यवेश जी ने

अगले पृष्ठ पर जारी

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

पृष्ठ 1 का शेष

आयुर्वेद को अपनाकर ही अपने जीवन को सुखमय बना सकते हैं – सत्यप्रकाश आर्य

हमारा उदेश्य आंकड़े बदला नहीं, मानसिकता बदलना है – पूनम आर्या

बेटा एवं बेटी को समान अवसर उपलब्ध कराना चाहिए – सुनील देशवाल

शिक्षा हो या खेल किसी भी क्षेत्र में कम नही बेटियां – प्रवेश आर्या

अपने विचार रखते हुए कहा कि स्वामी इंद्रवेश जी आर्य राष्ट्र निर्माण के प्रथम स्वप्न द्रष्टा थे। उन्होंने ही आर्य राजनीति की नींव रखी। समाज में एक आदर्श राजनीति की पहल उन्होंने ही की। आज हम उनके अधूरे स्वप्नों को पूरा करने का संकल्प लेकर आगे कार्य कर रहे हैं।

हमारा उदेश्य आंकड़े बदला नहीं, मानसिकता बदलना है – पूनम आर्या

बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्ष बहन पूनम आर्या जी ने कहा कि बेटी बचाओ अभियान के बैनर तले कार्य निरन्तर चल रहा है। कन्याओं में अच्छे संस्कार, आध्यात्मिकता, सच्ची धार्मिकता एवं शारीरिक उन्नति सम्बन्धी क्रियाओं के प्रशिक्षण के लिए बेटी बचाओ अभियान ने अब तक सोलह राष्ट्रीय शिविर आयोजित किये हैं। इस शिविर में लगभग पांच सौ लड़कियां भाग ले रही हैं। बहन पूनम आर्या ने कहा कि बेटियों को स्वयं सुरक्षा स्वाभिमान से जीने की कला अब सीखनी होगी। उन्होंने कहा कि बेटियां नारे बदलने से नही मानसिकता बदलने से बचेंगी। आज बेटियों के नाम पर विभिन्न नारे बोले जा रहें हैं लेकिन उसके बावजूद भी लड़कियों के प्रति विकृत मानसिकता कम नही हुई। आज भी लड़की को दूसरे दर्जे का माना जाता है, आज भी छेड़छाड़ की घटना, दहेज उत्पीड़न व बलात्कार आदि घटना आम बात है। इससे समाज की दोहरी मानसिकता का पता चलता है। जिस दिन समाज में लड़कियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बन जायेगा उसी दिन से समाज में एक नव परिवर्तन आएगा। उन्होंने कहा कि हमारा प्रयास केवल लिंगानुपात के आंकड़े बदलना नहीं बल्कि लड़कियों के प्रति मानसिकता व व्यवहार को बदलना है।

आयुर्वेद को अपनाकर ही अपने जीवन को सुखमय बना सकते हैं – नाड़ी वैद्य सत्यप्रकाश आर्य

शिविर में मुख्य अतिथि नाड़ी वैद्य कायाकल्प रोहतक के संस्थापक वैद्य सत्यप्रकाश आर्य ने कन्याओं को घरेलू नुस्खे बताए व कहा कि आपकी रसोई ही आपका चिकित्सालय है। यदि हम रसोई के सामान का सदुपयोग ठीक से करते हैं तो हम बहुत सी बीमारियों से बच सकते हैं। उन्होंने कहा कि प्राचीन काल से हमारे देश में आयुर्वेद की पद्धति से बीमारियों का इलाज होता आया है। जोकि बहुत सफल भी है। लेकिन वर्तमान भौतिकवादी युग में जल्द लाभ के नाम पर अन्य पद्धतियों का सहारा लिया जा रहा है जो इतना सरल व सस्ता आज के दिन नहीं है जितना आयुर्वेद है। यदि हम अपने जीवन को सुखमय बनाना चाहते हैं तो हमें आयुर्वेद, योग व यज्ञ की ओर लौटना पड़ेगा।

बेटा एवं बेटी को समान अवसर उपलब्ध कराना चाहिए – सुनील देशवाल

समाजसेवी श्री सुनील देशवाल जी ने कहा कि समाज के लोग अब बेटा और बेटी के बीच भेद करने वाली मानसिकता को पीछे छोड़ दें। उन्होंने कहा कि जो परिवार बेटा और बेटी में फर्क नहीं करते और बेटियों को भी समान अवसर प्रदान करते हैं उस घर की बेटियों ने समाज में आगे बढ़कर राष्ट्र एवं परिवार की सेवा कर रही हैं।

शिक्षा हो या खेल किसी भी क्षेत्र में कम नही बेटियां – प्रवेश आर्या

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या जी ने कहा कि आज बहनों का शिक्षा के साथ–साथ अन्य क्षेत्रों में शानदार सफलता का प्रदर्शन इस बात को भी साबित करता है कि बेटियां किसी भी क्षेत्र में कम नहीं हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षा व खेल आज सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं इन दोनों में आज बेटियां सबसे आगे हैं। इसलिए आज बेटियों को बेहतर सुविधाएं देना जरूरी है। उनको भी लड़कों के समान अवसर मिलने चाहिए। उनको भी मान सम्मान व स्वाभिमान से जीने का अधिकार देने की आवश्यकता है। यदि हम सब मिलकर ये कर पाए तो समाज परिवर्तन से कोई नहीं रोक सकता।

वैदिक भारतीय संस्कृति ही सर्वोच्च संस्कृति – मनीषा पंवार

शिविर में जोधपुर से पधारी जोधपुर शहर की पूर्व विधायक बहन मनीषा पंवार जी ने कहा कि वैदिक भारतीय संस्कृति सर्वोच्च संस्कृति है। इस संस्कृति को महिला ही सम्भाल सकती है। उन्होंने कहा कि महिलाओं को आज अपना आत्मविश्वास

बनाये रखना चाहिए। उन्होंने बेटियों से आह्वान किया कि आप कुछ भी बन जायें पर अपना स्वाभिमान और आत्मसम्मान कभी गिरने मत देना। जीवन में संयम को अवश्य अपनायें। उन्होंने कहा कि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने व्यवहार और आचरण के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करना ही अपना ध्येय बना लें। एक संयमी माँ ही श्रीराम, श्रीकृष्ण तथा स्वामी दयानन्द और भगत सिंह को तैयार कर सकती है।

बेटियों के सर्वांगीण विकास का कार्यक्रम अत्यन्त प्रशंसनीय – डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

मुख्य वक्ता डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री जी ने कहा कि हमारी संस्कृति वैश्विक संस्कृति है। आज भी हमें ऋषि दयानन्द के आदर्शों पर चलने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि आज मुझे यहां पर बेटियों के करतब को देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने महिलाओं के उत्थान के लिए सबसे पहले आवाज उठाई और महिलाओं को उनका हक दिलाने के लिए प्रयत्नशील रहे। स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम के माध्यम से बेटियों के चरित्र निर्माण का जो कार्य चलाया जा रहा है यह अत्यन्त प्रशंसनीय और अनुकरणीय है। मैं इसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा करता हूँ।

पाखण्ड मुक्त समाज का निर्माण अपना लक्ष्य बनायें – बिरजानन्द एडवोकेट

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष श्री बिरजानन्द एडवोकेट ने कहा कि पाखण्ड मुक्त समाज का निर्माण अपना लक्ष्य बनायें, तभी कल्याण हो सकता है।

स्वामी इन्द्रवेश हमारे प्रेरणा स्रोत थे – चौ. अजीत सिंह

चौ. अजीत सिंह ने कहा कि युवाओं के प्रेरणास्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज हमारे प्रेरणास्रोत थे। स्वामी जी द्वारा किये गये कार्यों का हमारे जीवन पर गहरी छाप पड़ी।

मेरे जीवन का निर्माण स्वामी इन्द्रवेश जी की प्रेरणा से हुआ – यशवन्त सिंह देशवाल

श्री यशवन्त सिंह देशवाल जी ने कहा कि स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज की प्रेरणा से मेरे जीवन में बदलाव आया।

नशाखोरी के विरुद्ध पुनः आन्दोलन शुरू करे आर्य समाज – रढ़धीर सिंह रेढू

श्री रढ़धीर सिंह रेढू ने कहा कि आर्य समाज को नशाखोरी के विरुद्ध जन–जागरण अभियान चलाकर आन्दोलन करना चाहिए, जिससे प्रान्त एवं राष्ट्र को नशामुक्त कराया जा सके।

सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आर्य समाज अभियान चलाये – मनमोहन गोयल

श्री मनमोहन गोयल जी ने कहा कि सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आर्य समाज जन आन्दोलन चलाये, जिससे समाज में फैली सामाजिक कुरीतियों से निजात दिलाई जा सके।

सार्वदेशिक आर्य युवती परिषद् हरियाणा की प्रधान बहन मुकेश आर्या ने कहा कि इस शिविर में बेटियां सर्वांगीण विकास सीखती हैं। उन्हें जहाँ आध्यात्मिक प्रशिक्षण बहन पूनम आर्या देती हैं, वहीं शारीरिक व्यायाम का प्रशिक्षण योग्य प्रशिक्षक दे रहे हैं।

इस सात दिवसीय राष्ट्रीय कन्या शिविर में योग्य प्रशिक्षिकाओं द्वारा सर्वांगसुंदर व्यायाम, जूडो, लाठी चलाना, स्तूप निर्माण, संध्या, हवन आदि का प्रशिक्षण दिया जाता रहा है। दोपहर बाद के सत्र में युवा संसद का आयोजन किया जाता रहा। जिसमें महिला अधिकारों के ऊपर सभी प्रतिभागी शिविरार्थियों ने अपने–अपने विचार रखे।

इस सात दिवसीय शिविर के दौरान 11 जून को शहर में भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। यह विशाल शोभा यात्रा वाहनों के माध्यम से सायं 5.30 बजे स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली से प्रारंभ होकर सुंदरपुर होती हुई जींद बाईपास, सुखपुरा चौक से मॉडल टाउन पहुंची। इस विशाल शोभा यात्रा को आर्य नेता स्वामी आर्यवेश जी ने ओ३म् ध्वज दिखाकर रवाना किया। यह विशाल शोभा यात्रा मॉडल टाउन से पावर हाउस होती हुई मानसरोवर पार्क पर संपन्न हुई। शोभा यात्रा का नेतृत्व बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्ष बहन पूनम आर्या तथा संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने किया।

सम्मान समारोह में आर्य विरक्त सम्मान स्वामी रामवेश जी को, वैदिक विद्वान सम्मान डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री जी (अमेठी), युवा सम्मान श्री सज्जन सिंह राठी, रोहतक, श्री अजीतपाल (जींद), श्री धर्मेन्द्र पहलवान (छपरौली), श्री अवनीश आर्य (रठौड़ा), और आर्य वीरांगना सम्मान से जिन्हें सम्मानित किया गया उनमें दिल्ली की शालिनी गुप्ता, रोहतक की सुषमा आर्या, मोखरा की एकता आर्या, सुखदा शास्त्री को प्रदान किया गया। भजोपदेशक सम्मान से बहन कल्याणी आर्या को सम्मानित किया गया। इनके अतिरिक्त 21 महानुभावों को सक्रिय कार्यकर्ता सम्मान से सम्मानित किया गया। इनमें सर्वश्री जगदीश सींवर, राजेंद्र आर्य सिरसा, मास्टर ओम प्रकाश, कैप्टन सूबे सिंह, बलराज मलिक, जोगेंद्र आचार्य, बलवंत आर्य, दलबीर आर्य मुकलान, जयवीर आर्य, नरेश कौशिक, वीरेंद्र कुण्डू, दिलबाग सिंह, जिले सिंह, रणधीर सिंह रेढू एडवोकेट, सत्यवीर आर्य, मनोज फरमाना, राजेश आर्य आदि आर्यजन सम्मानित हुए। शिविर के दौरान सर्वश्री सज्जन सिंह राठी, वीरेंद्र कुण्डू एडवोकेट, जगदीश, कल्याणी आर्या आदि ने भी अपने विचार रखे।

12 जून को राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण शिविर का समापन हुआ। समापन अवसर पर आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया तथा भव्य व्यायाम प्रदर्शन भी आयोजित किया गया। सात दिवसीय यह कन्या चरित्र निर्माण शिविर भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। शिविर में माता मूर्ति देवी, सुनीता खासा, सुकृति खासा, सुषमा आर्या, रिंकू आर्या, पूजा आर्या, मोनिका आर्या, एकता आर्या, अंजू आर्या, शक्ति आर्या, पूनम आर्या, पूनम कुण्डू, रजकुमारी आर्या, कविता आर्या, बबिता आर्या, रोशनी आर्या, सुमित्रा आर्या, कमलेश आर्या, नीलम आर्या आदि का विशेष सहयोग रहा

जीवन-साथी का चुनाव कैसे करें?

डॉ० देवशर्मा वेदालंकार

चुनाव एक ऐसा शब्द है जो मनुष्य की सम्पूर्ण सोचने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है। जब भी कभी ऐसा अवसर आता है, तो हम सोच में पड़ जाते हैं कि किसे प्राप्त करें? और किसे छोड़ें? हाँ यदि हमें फल व सब्जी लेनी हो तो हम आसानी से चुनाव कर लेते हैं। यदि किसी को घड़ी, टी. वी. फ्रिज, कपड़ा या घर खरीदना हो तो कैसे चुनें? यह भी भी बड़ी समस्या बन जाती है। कैसे लोग हमारे आस–पास हों? या हम कैसे लोगों के साथ रहें? यह चुनना उससे भी कठिन हो जाता है, परन्तु सबसे कठिन समस्या तब आती है जब हम जीवन–साथी चुनते हैं।

चुनाव का प्रचलित मार्ग

चुनाव का एक प्रचलित मार्ग जन्मपत्री है। जो बहुत सरल है, जिसमें सिरदर्दी भी नहीं है, किसी प्रकार के उत्तरदायित्व का अहसास भी नहीं है। सारा काम पण्डित जी का है, ज्योतिषी महाराज का है। जैसा ये लोग कहते हैं वैसा ही मान लिया जाता है और विवाह हो जाता है। दो विपरीत लिंग वाले व्यक्तियों को एक साथ रहने की व्यवस्था हो जाती है। परन्तु प्रश्न यह होता है कि क्या उनके गुण–कर्म–स्वभाव मिलते हैं? क्या वे एक साथ प्यार से रह पाते हैं? पण्डित जी ने पत्रियों को मिलाया होगा, फिर भी दोनों के विचारों, आदतों एवं कार्यों में भिन्नता क्यों पायी जाती है? इसका निर्णय हम पाठकों पर छोड़ देते हैं क्योंकि सभी के घरों में विवाह होते हैं। आज समाज की क्या स्थिति है, किसी से छुपी हुई नहीं है। जिन कार्यों को हमें अपनी समझ–बूझ के आधार पर करना चाहिए था हम उनमें भी परतन्त्र हो गये हैं।

महर्षि मनु प्रदत्त व्यवस्था

महर्षि मनु ने विवाह विषयक व्यवस्था प्रदान की उन्होंने सदृश गुणों वाले लड़के–लड़कियों के विवाह को उत्कृष्ट माना हैः–

उत्कृष्टायाभिरूपाय वराय सदृशाय च।
अप्राप्तामपि तां तस्मै कन्यां दद्याद्यथाविधि।। मनु० ६/८८

यदि माता पिता कन्या का विवाह करना चाहें तो अति उत्कृष्ट शुभ गुण–कर्म–स्वभाव वाली कन्या के समान रूप लावण्य आदि गुणयुक्त वर को चाहें। अन्यथा वे चेतावनी देते हुए कहते हैं– गुणहीन पुरुष से विवाह न करेंः–

काममामरणात्तिष्ठेद् गृहे कन्यर्तुमत्यपि।
न चैवैनां प्रयच्छेत्तु गुणहीनाय कर्हिचित्।। मनु० ६/८६

चाहे मरणपर्यन्त कन्या पिता के घर में बिना विवाह के बैठी रहे परन्तु गुणहीन असमान दुष्टपुरुष के साथ कन्या का विवाह कभी न करें। हमने इस चेतावनी को स्वीकार नहीं किया और इसके महत्व को भी न समझ सकें। परिणाम स्वरूप अनेक बेटियों के गृहस्थ नरक समान बन गये। उनकी सुलह–सफाई कराते–कराते माता पिता का जीवन कष्टों व चिन्ता से परिपूर्ण हो गया। इतना ही नहीं आने वाले बच्चों का अनमोल जीवन असमान गुण–कर्म–स्वभाव की भेंट चढ़ गया। इतना सब कुछ हो जाने पर भी हम इसके महत्व को नहीं समझ सके।

महर्षि दयानन्द स्वीकृत व्यवस्था

महर्षि ने इस व्यवस्था को अति महत्वपूर्ण पाया और अपने पूना प्रवचन में इस श्लोक को उद्धृत करते हुए लिखा–इसी प्रकार मनु जी कहते हैं कि '' कन्या को मरने तक चाहे कुमारी रखो परन्तु बुरे मनुष्य के साथ विवाह न करो''।

इसी प्रकार सत्यार्थप्रकाश में भी लिखते हैं– ''चाहे लड़का–लड़की मरणपर्यन्त कुमार रहें परन्तु असदृश अर्थात् परस्पर विरुद्ध गुण–कर्म–स्वभाव वालों का विवाह कभी नहीं होना चाहिए''। इससे यह सिद्ध होता है कि महर्षि गुण–कर्म–स्वभाव के आधार पर ही विवाह व्यवस्था को स्वीकार करते हैं और इसी आधार पर चुनाव की प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हैं।

''गुण-कर्म-स्वभाव चुनाव का आधार हो''

सर्वेक्षण व चर्चाएं हमें इस निष्कर्ष पर पहुँचाती हैं कि यह तो अधिकतर लोग जानते हैं कि आर्यों के विवाह सम्बन्धों का आधार गुण–कर्म–स्वभाव ही है। परन्तु लड़के–लड़कियों के गुण–कर्म–स्वभाव कैसे हैं? इनको किस आधार पर मिलाएं यह कोई नहीं जानता और यदि कोई जानता भी है तो उसने इस विद्या का प्रकाश नहीं किया सिवाय महर्षि दयानन्द सरस्वती के। महर्षि ने अपने ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' के समावर्तन विवाह गृहस्थाश्रम विधि प्रकारण में गुण–कर्म–स्वभाव के आधार पर चुनाव कैसे करें? इस पर्वत–सी समस्या का इतना सरल और सटीक समाधान प्रस्तुत कर दिया जो हमेशा गृहस्थियों को एक रास्ता दिखाता रहेगा और सुन्दर समाज के निर्णय में सहायता करेगा। वे कहते हैंः–

''जब कन्या या वर के विवाह का समय हो अर्थात् जब एक वर्ष या छह महीने ब्रह्मचर्याश्रम और विद्या पूरी होने में शेष रहें तब उन कन्या एवं कुमारों का प्रतिबिम्ब अर्थात् जिसको फोटोग्राफ कहते हैं अथवा प्रतिकृति उतार के कन्याओं की अध्यापिकाओं के पास कुमारों की, कुमारों के अध्यापकों के पास कन्याओं की प्रतिकृति भेज देवें''।

एक समय था जब सभी बच्चे गुरुकुलों में गुरुओं के सानिध्य में पढ़ते थे। लड़के–लड़कियां अलग–अलग संस्थाओं में रहते थे। अध्यापक व अध्यापिकाएं बच्चों के प्रति अपना कर्त्तव्य समझते थे और उनके जीवन चरित्र का पुस्तक लिखते थे। परन्तु अब ऐसा सम्भव नहीं है। आज इस काम को अभिभावक कर सकते हैं। क्योंकि बच्चे अधिकतर उनके पास रहते हैं। ऐसा ही महर्षि उनसे चाहते थे।

''जिस-जिस का रूप मिल जाए उस-उस के इतिहास अर्थात् जन्म से लेके उस दिन पर्यन्त जन्म चरित्र का पुस्तक हो उसको अध्यापक लोग मंगवा के देखें। जब दोनों के गुण-कर्म-स्वभाव सदृश हो, तब जिस-जिस के साथ जिसका विवाह होना योग्य समझें उस-उस पुरुष व कन्या का प्रतिबिम्ब (फोटोग्राफ) और इतिहास कन्या और वर के हाथ में देवें और कहें कि इसमें जो तुम्हरा अभिप्राय हो तो हमको विदित कर देना''

महर्षि चाहते थे लड़के– लड़कियों का इतिहास अर्थात् जन्म से लेके उस दिन पर्यन्त जन्म चरित्र का पुस्तक हो अर्थात् उस पुस्तक में गुण–कर्म–स्वभाव के विषय में पूर्ण जानकारी लिखी हो, जिसको पढ़कर सब कुछ पता चल जाए। जिसका पता जन्मपत्री से नहीं चल पाता। महर्षि कहते हैं कि ''ऐसी पुस्तक को मंगवाकर देखें''। अब प्रश्न होता है कहाँ से मंगवायें? किससे मंगवाये? किसने लिखी थी? यह तो एक समस्या बन गई। जिसका समाधान चाहिए। कौन लिखेगा? माँ लिखेगी पिता लिखेगा, दादी या दादा लिखेंगे। माँ सबसे अच्छा लेखक सिद्ध हो सकती है क्योंकि वह बच्चे के विषय में सब कुछ जानती है। इतना सच्चा, इतना प्रामाणिक इतिहास, जन्मपत्री, जन्म का पुस्तक अथवा जीवन चरित्र माँ के सिवाय कोई भी नहीं लिख सकता है।

जब बच्चा जन्म लेता है माँ तब से उसके गुण–कर्म–स्वभाव को जानने लगती है। माँ को पता है उसका बच्चा रोकर दूध पीता है या हंसकर। माँ से चिपका रहता है या खेलता रहता है। बस दो पंक्तियां लिख दे, जैसे–जैसे बड़ा होता है वैसे–वैसे उसके गुण–कर्म–स्वभाव भी प्रकट होने लगते हैं।

पाँच वर्ष की अवस्था तक बच्चे का स्वभाव भी अत्यधिक महत्वपूर्ण बन जाता है। जैसे जिद्दी, चिड़चिड़ा, क्रोधी, सौम्य, प्रसन्नचित्त, कामुक आदि। समझदार माँ बच्चे के स्वभाव को बिगड़ने नहीं देती। आज अनेक माँ मुझसे शिकायत करती हैं कि मेरा बच्चा १२ वर्ष का है वह घर का खाना नहीं खाता, मेरा बच्चा बहुत जिद्दी है, बहुत क्रोधी है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि माँ ने शुरू से ही उसके गुण–कर्म–स्वभाव को जानकर सुधारने का प्रयास नहीं किया। आचार्य चाणक्य कहते हैं– जिसका स्वभाव जैसा होता है वह वैसा ही काम करता है उस स्वभाव को कभी नहीं छोड़ता है। अंगारे को सैंकड़ों बार धोने पर भी वह मैल को नहीं छोड़ता है।

स्वभावो यादृशो यस्य न जहाति कदाचन।
अंगार शतधौतेन मलिनत्वं न मुञ्चति।।

पञ्चतन्त्र में भी कहा गया है–मनुष्य की परीक्षा स्वभाव से ही की जाती हैः–

सर्वस्य हि परीक्ष्यन्ते स्वभावाः नेतरे गुणाः।
अतीत्य हि गुणान् सर्वान् स्वभावोमूर्ध्नि वर्तते।।

पाँच वर्ष के पश्चात् बच्चे के गुण प्रकट होने लगते हैं। जैसे सच बोलना, मारपीट न करना, सहनशील, चुस्त, शक्तिशाली, श्रोता, निडर, आदि। इस अवस्था में बच्चों में गुण–अवगुण दोनों आने लगते हैं। परन्तु यदि माता–पिता सावधान हैं और उनमें वे अवगुण नहीं है तो बच्चा अवगुणों से बच जाता है। उनको देखना है कि बच्चा सच बोलता है या झूठ? मारपीट करता है या चीजों को उठाकर फैंक देता है, चीजें न मिलने पर, बात न मानने पर सहनशील रहता है, देखने में शरीर शक्तिशाली लगे, चलते–चलते गिरता तो नहीं, खेलने में रुचि लेता है, बड़ों की बात रुचि से सुनता है, छोटी मोटी चीजों से, जानवरों से, बस से, सुई से, भूत–प्रेत से, चुड़ैल आदि से न डरता हो, बाँटकर खाने वाला, छीना–झपटी न करने वाला।

दस से बीस वर्ष की उम्र के बीच गुणों में वृद्धि होने लगती है। जैसे ब्रह्मचर्य, कर्मठता, धीर, वीर, शान्त, ज्ञानी, मानवतावादी, गुणग्राही, दयालु आदि। ब्रह्मचर्य इस समय शरीर में परिवर्तन होता है, धातु की वृद्धि होती है, उसको सम्भालकर रखना। धार्मिकता–अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक होना। कर्मठ– काम को देखकर बहाने न बनाने वाला। धीर–अचानक प्रतिक्रिया न करने वाला, स्थिर चित्त वाला, वीर–बहादुर जो ठान ले उसे पूरा करके दिखाने वाला, शान्त– बात–बात पर न लड़ने वाला, ज्ञानी–ज्ञान प्राप्त करने में प्रमाद न करने वाला, मानवतावादी– समझबूझ में विश्वास करने वाला, विचार कर कार्य करने वाला, दयालु–कठोरता का व्यवहार न करने वाला। ऐसे बहुत सारे गुण बच्चों में होने चाहिएँ। माता पिता बहुत अच्छी प्रकार से अपने बच्चों के इन गुणों को जानते हैं, परन्तु लिखते नहीं। यदि लिखें तो जहाँ माता–पिता की जानकारी में रहें वहाँ बच्चों को भी पता रहेगा कि हमारी सारी बातों से माता–पिता अवगत हैं। इस प्रकार माता–पिता अपने बच्चों को दुर्गुणों से बचा सकते हैं।

तीसरी बात कर्म के विषय में है। इस विषय में माँ बच्चे की गतिविधि के बारे में लिखे। बच्चा कैसे काम करता है? कुछ काम ऐसे होते हैं जिनसे सबको खुशी मिलती है तथा कुछ काम ऐसे होते हैं जिनसे सबको कष्ट मिलता है। जिन कामों से खुशी मिलती है उनको लिखे और जिनसे कष्ट मिलता है उनको भी लिखे। दोनों प्रकार के कार्यों से बच्चों को भी अवगत करायें। अच्छे कामों की प्रशंसा करें और बुरे कामों को न करने की प्रेरणा दें, उनसे होने वाली हानियाँ भी समझायें। किन कामों में रुचि बनती है, किन कामों में नहीं। कामों को सावधानी से करता है या लापरवाही से, संवार कर करता है या बिगाड़कर। जब बच्चा बड़ा हो रहा होता है तो सावधान माता–पिता सारी बातों को जानकर व उचित प्रेरणा देकर बच्चे को गृहस्थाश्रम में जाने योग्य बना देते हैं। इस प्रकार माता–पिता बच्चों के गुण–कर्म–स्वभाव के विषय में लिखें और अवश्य ही लिखें एक बार लिखना शुरू कर देंगे तो आगे भी लिखते रहेंगे। आज डाक्टर भी छोटे बच्चों की सभी गतिविधि लिखने पर जोर दे रहे हैं। वैसे तो छोटे बच्चे से शुरू करना चाहिए फिर भी यदि आपका बच्चा बड़ा हो गया तो वहीं से लिखना शुरू कर दें।

कुछ लोगों का कहना है कि यदि हम अपने बच्चों के अवगुणों को लिखेंगे तो हमारे बच्चों से विवाह कौन करेगा? ऐसा कोई बच्चा नहीं है जिसमें किसी प्रकार का दोष न हो और सर्वथा शुद्ध हो, और फिर जीवन चरित्र लिखते समय जिन–जिन अवगुणों का पता चलता जाएगा उन–उनको आप दूर भी करने का प्रयास करेंगे। विवाह के लिए चुनाव ही उसका किया जाएगा जिसके गुण–कर्म–स्वभाव शुभ हैं, अशुभ, दुर्गुण'दुष्कर्म और विकृत स्वभाव वालों का नहीं। यही तो मनु महाराज व महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कहा है कि **''गुणहीन से मरणपर्यन्त विवाह न करें''**। और यदि झूठ बोलकर दोषों को छिपाकर विवाह कर भी दिया जाए तो सारी उम्र कोर्ट–कचहरी के चक्कर लगाते रहते हैं। इसके अतिरिक्त और कोई रास्ता नहीं है।

इस प्रकार दो उपलब्धियां सम्भव हो सकती हैं। एक तो बच्चे का जीवन चरित्र तैयार हो जाएगा, दूसरा गुण–कर्म–स्वभाव भी सुधर जायेगा। यह रास्ता तो बहुत सरल था, अनुकरणीय था, इससे परिवार का, समाज का बहुत लाभ था। परन्तु कष्ट का विषय यह है कि हम इसको अपना न सके और युवाओं को जीवन भर के लिए असमान गुण–कर्म–स्वभाव के जीवन–साथी के साथ जीवन व्यतीत करते के लिए छोड़ दिया। दुष्परिणाम यह निकला कि पति–पत्नी जीवन भर लड़ते रहे और उनके द्वारा आने वाले बच्चे भी झगड़ालू स्वभाव के बनते चले गये। यदि हम अभी भी इस रास्ते को जो हमें १२५ वर्ष पूर्व मिला था अपना सकें तो परिवार का, समाज का, राष्ट्र का बहुत भला हो सकता है।

–ए.-१/४८, सैक्टर-६, रोहणी, दिल्ली-८५
दूरभाषः-२७०५६२४०, ६८१०६६६८६५

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली में आयोजित राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर की चित्रमय झलकियाँ

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली में आयोजित युवा चरित्र निर्माण शिविर की चित्रमय झलकियाँ

पुरुष दयानन्द

—डॉ० सूर्यकान्त

ऋषि दयानन्द की विशेषताएँ अनेक थीं। उन सभी पर मनीषियों ने समय–समय पर प्रकाश डाला है। ऋषि दयानन्द ने जो कुछ भी अपने छोटे से जीवन में किया उसका मंगलमय परिणाम हमारे सामने है। इस देश में जो कुछ भी प्रचार या स्वतन्त्रता आज आपको दीख पड़ती हैं, वह सब यथार्थ में उसी ऋषि की देन है क्योंकि उसी ने हमें सोते से जगाया था और उसी ने हमें ऋषियता की झांकी दिखाई थी।

किन्तु आज हमें दयानन्द द्वारा प्रवर्तित सुधारों के विषय में कुछ नही कहना। उन पर पर्याप्त कहा जा चुका है। आज हमें उनकी उस विशेषता की ओर आर्य जनता का ध्यान आकृष्ट करना है जो कि आज तक हम सबसे छिपी रही है।

हमने एक अभिप्राय विशेष से ऋषि दयानन्द को पुरुष कहा है। वे सच्चे अर्थ में पुरुष थे क्योंकि भारत के सनातन इतिहास में सहस्त्रों वर्ष पश्चात् पुरुष शब्द के सच्चे अर्थ को उन्होंने पहचाना था और अपने आपको पुरुष बनाने का प्रयत्न किया।

ऋग्वेद का पुरुषसूक्त (१०–६०) भावगरिमा की दृष्टि से अश्रुतपूर्व प्रसिद्ध है क्योंकि इसमें पुरुष का रूपक खड़ा किया गया है और उसी के होंम से शिव में यज्ञ एवं पदार्थ ज्ञान की रचना बताई गई है। पुरुषसूक्त के प्रथम मंत्र में पुरुष को सहस्त्र सिरों वाला, सहस्त्र आँखों वाला, सहस्त्र चरणों वाला बताते हुये कहा गया है कि उसे इस अशेष धरती अंबर को ढक रक्खा है और वह इसे ढक कर भी दस अंगुल इससे ऊपर उठा हुआ है। दूसरे मन्त्र में बताया गया है कि भूत, भविष्यत् एवं वर्तमान सभी कुछ पुरुष है और मृत्यों और अमरों पर उसी पुरुष का अखण्ड अधिकार है। तीसरे मन्त्र में संकेत है कि उस पुरुष की महिमा इतनी महान् हैं, नहीं वह इससे भी कहीं अधिक महान् हैं अशेष भूत उसके एक चरण हैं। उसके तीन चरण तो द्युलोक में अमर रूप से विराजमान हैं। आगे मन्त्रों में इस अवाल पुरुष से इस विश्वजगत की उत्पत्ति का मनोरम रूपक उभारा गया है, जिसे पढ़कर पाठक व्यापक महत्ता के ऐसे तुंगपर जा पहुँचता है जहां खड़े होकर उसे इस अशेष धरती अंबर पर उसी एक पुरुष का पसारा व्यापा दीख पड़ता है। पुरुष के इसी रूप का नाम विराट् है। भगवद्गीता में पुरुष के इसी विराट् रूप का अर्जुन को प्रत्यन्दन कराया गया है और पुराणों में मार्कण्डेय द्वारा देखे गये विराट् विष्णु रूप का यथार्थ आधार ऋग्वेद का पुरुषसूक्त ही है।

वेद में पुरुष शब्द का प्रयोग अत्यन्त व्यापक अर्थ में हुआहै। ऋग्वेद के दशम मण्डल के इक्यावनवें सूक्त के अष्टम मेंः–

''पुरुषम् ओषधीनाम्''

पुरुष का प्रयोग ओषधियों में व्याप्त हुए रस के अर्थ में हुआ है।

यजुर्वेद के इक्तीसवें अध्याय में इसी पुरुषसूक्त को दुहराया गया है। किन्तु इसमें कुछ और मन्त्र भी जोड़ दिये गये है। अठारहवां मन्त्र अत्यन्त मार्मिक है–

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्,
अदित्यवर्ण तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति,
नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।।

मन्त्र ने पुरुष को चार चाँद लगा दिये है और उसे इतना अधिक व्यापक एवं मनोहारी रूप दिया है जिसकी कल्पना भी हमारे लिए मनोऽतीत है।'' वह पुरुष है, वह महान् है, वह सूर्यवर्ण है वह अंधकार से परे है। उसे देखे बिना मृत्यु को पार करना असम्भव है, उसके सिवाय मोक्ष का मार्ग दूसरा नहीं है। इस मन्त्र ने पुरुष के यथार्थ महत्त्व को स्पष्ट कर दिया है। आगे के तीन मन्त्रों में पुरुष को पुजायति एवं ब्रह्मा वृत कह कर स्तुति की गई है।

मुण्डकोपनिषत् (२, १) में आता हैंः– पुरुष एवेदं विश्वं कर्म तपो ब्रह्म परामृतम्। अर्थात् यह सब कुछ कर्म, तप, पुरुष ही का पसारा है। वह ब्रह्म (महान्) है, वह पर है, वह अमर है। मन्त्र के पूर्वार्ध में पुरुष के व्यापक रूप की मार्मिक उत्थानिका की गई है। मन्त्र का परार्ध इस प्रकार है :–

एतद्यो वेद निहितं गुहायां
सोऽविद्याग्रन्थिं विकिरतीह सोम्य।

अर्थात् इस पुरुष ब्रह्म को जो मनुष्य गुहा में स्थापित हुआ देख लेता है उसकी अविद्या की गुत्थियां सुलझ जाती हैं। सुन्दर बात कही है और सुन्दर ढंग से कही है क्योंकि हमारा हृदय एक लैंस है, वह एक प्रकार का बल्व है जिसमें केन्द्रीभूत होकर आन्तरिक प्रकाश शतधा खिल उठता है। वह एक बिम्ब है, जिसमे पुरुष का महत्व अत्यन्त घनीभूत होकर हमारे सामने आता है। इसी में केन्द्रीय होकर पुरुष की विशालता के फव्वारे सद्सुधा फूटा करते हैं।

पुरुष के इस व्यापक अर्थ को यास्क ने अपने निरुक्त में (२,३) इस प्रकार व्यक्त किया हैः–

'पूरयतेर्वा। पूरयत्यन्तर पूरुष मभिप्रेत्य' अर्थात् जिससे यह विश्व भरा हुआ है वही पुरुष है। हमारा आत्मा भी पुरुष है, क्योंकि उससे हमारा शरीर, अर्थात् क्षेत्र परिपूर्ण है। पुरुष शब्द का प्रयोग इस अर्थ में भी वेद में हुआ है और यह बात पुरुष शब्द की महत्ता को प्रकट रूप से स्थापित करती है।

मुण्डकोपनिषत् के द्वितीय मुण्ड के प्रथम खण्ड में 'दिग्यो ह्यमूर्तः पुरुषः' से प्रारम्भ के 'पुरुष एवेदं' तक के मंत्रों से पुरुष के इसी विराट् रूप का व्याख्यान है, और निश्चय ही वैदिक काल में पुरुष शब्द से यही अर्थ लिया भी जाता था। किन्तु पुरुष शब्द के अर्थान्तरण का प्रारम्भ भी मुण्डकोपनिषत के 'पुरुष एवेदं' आदि मंत्र के पदार्थ से प्रारम्भ होकर वगेपनषित (२, ३) केः–

अंगुष्ठमात्रः पुरुषोऽन्तरात्मा सदा जनानाँ हृदये संनियिष्ठ।

इस मन्त्र में पूरा हो जाता है। मन्त्र का आशय है कि पुरुष अंगुष्ठमात्र है, वह मानव के अंगुष्ठमात्र हृदय में बैठा हुआ है। उक्ति साफ है किन्तु उसके यथार्थ आशय को भुलाकर उसके शब्दार्थ मात्र पर बल देकर वेदोत्तर कालीन आर्य पुरुष के मौलिक महत्व को भूल बैठा और अब उसका पुरुष सचमुच अंगूठे के बराबर बन गया और धीरे–धीरे वह स्वयं भी तिनके के बराबर बन बैठा।

निश्चय ही वैदिक आर्य का पूजा मन्दिर विश्व का यह विशाल प्रांगण था जिस पर वरुण का अमर आतपत्र छाया हुआ था। पुरुष की उसी व्यापक यज्ञशाला में बैठकर वैदिक ब्रह्मचारी होम किया करता था,

जो कि स्वभावतः अत्यन्त विशाल एवं व्यापक थां। ऋग्वेद के पुरुष सूक्त ने हमारे सम्मुख उसी होम की उत्थानिका प्रस्तुत की है। धीरे–धीरे हम लोग पुरुष शब्द के व्यापक अर्थ को भूलते गये और समय आया जबकि हम पुरुष का अर्थ इस पुर अर्थात् शरीर में सोने वाला करने लगे।

निरुक्तकार यास्क के समय में ही यह प्रवृत्ति चालू हो गई थी, तभी तो वे लिखते हैंः–

'पुरुषः पुरिषाद्। पुरिशेते इति।।

अब पुरुष शब्द परमात्मा को छोड़ मनुष्य में रूढ़ हो गया। किन्तु यदि इतने ही पर बस हो जाती तो कोई बात न थीं। यदि हम पुरुष की यथार्थ व्युत्पत्ति अर्थात् 'पूरयति' को भी याद रखते। किन्तु ऐसा न हुआ और हम उसकी व्युत्पत्ति भी ''पुरि शेते' यह करने लगे और इसी एक बात में भारत के नैतिक एवं भौतिक पतन के बीज संनिहित हैं। क्योंकि उस पुरुष की, जिसका कि स्वाभाविक धर्म ही विश्व में व्यापकर उसे सतत चालू रखता है, और साथ में उस आत्म रूप पुरुष को, जो कि हमारे शरीर रूप क्षेत्र में व्यापकर इसे नियंत्रित करता है, अब हम 'सोने वाला' कहने लगे, माया रूप बताने लगे, उस सर्वोत्कृष्ट क्रिया धन पुरुष को हम दिन में भी सोने वाला समझने लगे। हमारी इस प्रवृत्ति में ही हमारे पतन के बीज संनिहित रहते आये हैं।

निश्चय ही वैदिक युग का मानव पुरुष ही उसके महान् रूप की पूजा करता था– क्योंकि उसकी पूजा का लक्ष्य वह शक्ति थी जो जगत् के अणु–अणु में व्यापी हुई है और जिसके स्नेहपात्र में बंधा हुआ यह गोल जात अनवरत किसी अज्ञात चक्र में, किसी निर्लक्ष्य भ्रामिज्ञ में प्रतिक्षण घूम रहा है। तभी तो हमें वेद के हर सूक्त में कुछ ऐसे संकेत मिल जाते हैं जो इस यथार्थ पुरुष की ओर हमें बलात् खींच लेते है और कुछ काल के लिए हमें भी असीम एवं अवाल पुरुष में बदल देते हैं।

वेदों की सबसे बड़ी विशेषता उनकी यह व्यापक महत्व की भावना एवं आकांक्षा है। आप इन्द्र सूक्तों को पढ़िये। प्रतीत होगा कि आपके भौतिक बंधन टूट रहे हैं और आप मनोविज्ञान पर सवार हो धरती–अंबर की खुली सैर कर रहे हैं। तब आपके लिए सीमा नही रह जाती। तब आप वाल की गति एवं गणना से पार चले जाते हैं और आपके सम्मुख ओज, बल, तेजस् एवं ऐश्वर्य का ऐसा ज्वार उभरता दीख पड़ता है, जिसके सम्मुख ये मूर्त सागर थोड़े पड़ जाते हैं। हमारे वैदिक इन्द्र की सबसे बड़ी विशेषता यही है।

और जब आप वैदिक वरुण की ओर बढ़ते हैं तब आप एक ऐसे धर्म वितान के नीचे आ जाते हैं जिसका कोई ओर नहीं छोर नहीं, जहां पाप धुल चुका है और जहां पुण्य की छलछलाती जाह्नवी के तटों पर कुछ इस प्रकार के युगल घूम रहे हैं जो न मानव हैं, न अमर हैं जिनका शरीर कुछ कुन्दन सा, कुछ किरणों की चलती लाट जैसा दीख पड़ता है। उस जगत् की सीमा नहीं, इसका कोई आदि नहीं, कोई अन्त नहीं क्योंकि वह वरुण का है, वह सच्चे अवाल पुरुष का अपना जगत् है।

वेदों के किसी भी देवता को ले लीजिए वह पुरुष के किसी न किसी रूप का प्रतिबिम्ब है, सभी देवताओं के सम्मिलित रूप को वेद ने पुरुष कहकर पुकारा है– क्योंकि वह उन सब देवों में व्याप रहाहै उन सब में वह एक ही भरा हुआ है। उस असीम की पूजा हम सब लोग विश्व में असीम यज्ञ कुण्ड में किया करते थे क्योंकि हम हर जगह उसी को देखते थे, पत्ते–पत्ते और इंगित–इंगित में हमें उसी की थिरकन दीख पड़ती थी। शनैः शनैः हमारा पुरुश महान् न रहकर अंगुष्ठ मात्र रह गया और अब हम उसे अंगुष्ठमात्र की पत्थर मूर्ति में देखने लगे, मंदिर के एक अंधियारे कोने में हमने उस मूर्ति को रख दिया और वहां हम उसे अपने मानवीय शृंगारों से सजाने, रिझाने और सहलाने लगे। क्या मजाक है यह उस अबाल पुरुष को, जो चांद–सूरज में हंस रहा है, जो तारों में टिमटिमा रहा है, जो आकाश में साँस ले रहा है, जो हर जगह है, जोसब कुछ है– पर कुछ भी नहीं। अंगुष्ठमात्र पुरुष के सिवाय और कौन उस भगवान् अलख निरंजन को इस प्रकार चिढ़ा सकता है?

पुरुष दयानन्द ने वैदिक युग के हजारों वर्ष पश्चात् पुरुष की यथार्थ व्यापकता को पहचाना और स्वयं उस जैसा महान् बनने का प्रयत्न किया। पुरुष के यथार्थ आशय को हृदयंगम करके पुरुष दयानन्द ने मानव कृत सारे ही तुच्छ बन्धनों को तोड़ गिराया। दयानन्द को पुरुष हमने इसी मतलब से कहा है।

भारत के पाखंडियों ने मानव को जात–पात की छोटी–छोटी भौंडी क्यारियों में जकड़ कर बिठा दिया था। उन्होंने स्त्री–शूद्रों को सदा दास बनाये रखने के लिए उनका एक मात्र धर्म ही सेवा और चरण दबाना बताया था।

उन्होंने मानव के भावना–भरित पावन उपवन में गंदगी के ढेर लगाकर उसे गंदा बना दिया था। पुरुष दयानन्द ने जात पांत की क्यारियों को तोड़ फेंका, गन्दगी के ढेरों को दूर कर उसने मानव के उपवन को फिर से चमन बना दिया क्या यह काम उसका त्रिकाल में भी भुलाया जा सकता है?

जब हम स्वयं अंगुष्ठमात्र बन बैठे तब परेदशी भी हमें ठोकरों से सताने लगे। हम आपस में फट चुके थे, अपने–अपने चौके में चावल पकाने लगे थे। हमारी तूती घर में ऊँची थी, अपनों पर हम आग बरसाते थे, परायों के सम्मुख हमारी दाल न गलती थी। पुरुष दयानन्द ने यथार्थ पुरुष बनकर हमारे इन सभी बन्धनों को तोड़कर हमें स्वतंत्र बनाया हमें पुरुष बनाया क्या उसका यह काम कुछ मामूली था?

पुरुष उस शक्ति का नाम है जो इस विश्व को चला रहा है जो इसमें व्यापक रही है। वह सब में परिपूर्ण हो रही है– वह सब जगह है सब कुछ है, सीमा उसकी है नहीं, बन्धन उसे सताते नहीं, उसकी एक बौछार में विश्व में मैल धुल जाते हैं, उसके प्रकाश की एक फुलझड़ी के फटते ही अंबर में अगणित तारे आंख खोल देते हैं, उसकी एक 'आँख सूरज है तो दूसरी चाँद– इन ज्योतिर्मय आंखों के सम्मुख भी हम पाप में रमे रहते हैं हमारी इसी प्रवृत्ति को पुरुष दयानन्द तोड़ गया है।

भला होता यदि आजाद हो जाने पर हम पुरुष के सच्चे अर्थ को समझकर पुरुष बनने का प्रयत्न करने लगते किन्तु हम तो अनजाने फिर से उसी गर्त की ओर चल पड़े हैं जिससे कि पुरुश दयानन्द ने हमें बचाया था। यदि आर्य समाज की कभी आवश्यकता थी तो वह आज है। हमें अभी बहुत कुछ करना है। आदि पुरुष दयानन्द के सम्मुख प्रतिज्ञा करें कि हम उसके पदचिन्हों पर चलते हुए इस विश्व को सच्चा आर्य बनायेंगे।

आर्य संन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द जी का आकस्मिक निधन

आर्य जगत् के वीतराग एवं मूर्धन्य संन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी के आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर समूचे आर्य जगत में शोक की लहर दौड़ गई। स्वामी जी ने अपना परोपकार, समाजसेवा एवं वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार के लिए समर्पित किया हुआ था। स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी विगत कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। स्वामी जी आर्य समाज नागौरी गेट, हिसार, हरियाणा से जुड़कर वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार–प्रसार करते थे। स्वामी ब्रह्मानन्द जी कई अन्य संस्थाओं से भी जुड़े हुए थे और वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार के लिए अपना आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहते थे। ऐसे कर्मठ एवं वीतराग संन्यासी का निधन निसंदेशह आर्य समाज एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी ब्रद्धानन्द जी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए अपनी ओर से श्रद्धांजलि देते हुए परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति एवं सद्गति के लिए प्रार्थना की।

मोटापा घटाने के आहारीय सूत्र

सामान्यतः एक व्यक्ति का औसत वजन ५०–५५ किलो होता है अतः इससे अधिक वजन मोटापा माना जाता है। व्यक्ति के कद की लम्बाई के अनुसार औसत वजन नापने का एक सूत्र है १''= १ किलो अर्थात् व्यक्ति की लम्बाई यदि ५ फीट है तो उसका वजन ६० किलो से अधिक नहीं होना चाहिए। मोटापा हृदय रोग, बवासीर, श्वांस रोग, घुटनों की कमजोरी, कब्ज आदि कई रोगों का कारण बनता है अतः इसे न बढ़ने देना चाहिए। मोटापा वंशानुगत भी होता और अधिक आरामतलबी, गरिष्ठ आहार का सेवन, व्यायाम–भ्रमण आदि न करना, जल का कम सेवन करना भी इसके मुख्य कारण हैं। मोटापा दूर करने के कुछ उपयोगी आहरीय सूत्र यहां दिये जा रहे हैं जिनका लाभ मोटापा के शिकार भाई–बहन, युवा–वृद्ध उठा सकते हैं। दो–तीन महीने तक इन सूत्रों का अनुपालन करके आप इनके चमत्कारी प्रभावों का सहज अनुमान लगा सकेंगे।

- प्रातः उठते ही एक गिलास निवाये जल का सेवन करें जिसमें चुटकी भर सेंधा नमक, एक निम्बू का रस व एक टी–स्पून शहद भी मिला हो। मधुमेह के रोगी शहद का उपयोग अपने डाक्टर के परामर्श के अनुसार करें।
- प्रदूषण रहित स्थान पर तीन मील प्रति घंटा प्रातःकालीन सैर करें। इससे एक महीने में एक किलो वजन घटेगा। यदि एक लौटा (चार–गिलास) उक्त जल ग्रहण करके आप दौड़ लगाने की स्थिति में हों तो महीने में पांच किलो तक आप अपना वजन कम कर सकते हैं।
- प्रातःराश में रात्रि को भिगोई चने की दाल शहद से मिलाकर लें, अथवा करेले या पालक के रस में निम्बू मिला कर लें।
- छाछ का सेवन जिसमें अजवाइन और काला नमक मिला हो, मोटापा कम करता है।
- एक कप पानी में तुलसी का रस और शहद मिला कर लेने से भी मोटापा घटता है।
- आलू मोटापे का कारण माना जाता है लेकिन आलू उबाल कर अर्थात् रसेदार खायें या गर्म रेत व राख में सेक कर खायें तो इससे मोटापा नहीं बढ़ता।
- सप्ताह में एक बार पूरे दिन अन्न और दूध को छोड़ केवल रस लें या फलाहार पर रहें।
- दो–तीन तरह के मौसमी–फल, सलाद पत्ती, मूली, गाजर, टमाटर, पत्ता गोभी, अदरक, हरी मिर्च, हरा धनिया, काली मिर्च, सेंधा नमक, रात के भिगोये काले चने और निम्बू रस के मिश्रण से तैयार सलाद मोटापा घटाने का बेहतर उपाय है।
- मोटापे के साथ–साथ मधुमेह के नाशक दलिये का सेवन १५–३० दिन तक नियमित रूप से प्रातः राश के रूप में करें तो चमत्कारी लाभ मिलेगा।

दलिया तैयार करने के लिए गेहूँ=५०० ग्राम, बाजरा=५०० ग्राम, चावल=५०० ग्राम तथा साबुत मूंग=५०० ग्राम लें और अलग–अलग इन्हें ओखली में बारीक–बारीक कूट लें और फिर अलग–अलग ही कढ़ाई में सेक कर अर्थात् भून कर रख लें। अब इन सबका मिश्रण तैयार कर के इसमें २० ग्राम अजवाइन और ५० ग्राम सफेद तिल मिला लें।

जब दलिया बनाना हो तो उक्त मिश्रण में से ५० ग्राम मिश्रण लेकर ४०० ग्राम पानी में डालकर पकायें। इसमें स्वादानुसार सब्जियाँ व हल्का नमक भी मिलाया जा सकता है। यह एक व्यक्ति के लिए पर्याप्त नाश्ता है।

मोटापा घटाने का सात दिन का एक बेहतर आहारीय नुस्खा भी है जिसका दो–तीन महीने तक पालन करने से निश्चित रूप से वजन घटेगा।

पहले दिन का आहार– केले व चीकू को छोड़ कर पूरे दिन सभी प्रकार के मौसमी फल पेट भर कर खायें। प्यास लगे तो एक गिलास निम्बू पानी लें जिसमें थोड़ा–सा शहद भी मिला हो।

दूसरे दिन का आहार– सभी प्रकार की सब्जियाँ कच्ची उबालकर थोड़ा–से तेल में छोंक कर हल्का नमक मिला कर खायें। इसमें मूली, ककड़ी, टमाटर, लोकी (घीया), पालक, पत्ता गोभी अधिक मात्रा में लें।

तीसरे दिन का आहार– सब्जियाँ और फल दोनों बराबर मात्रा में भर पेट खायें।

चौथे दिन का आहार– पानी अत्यधिक मात्रा में पीयें और आठ केले व एक गिलास दूध लें।

पांचवें दिन का आहार– ६ टमाटर व २५० ग्राम पनीर खायें तथा दो सैंडविच अर्थात् ४ टुकड़े डब्ल रोटी पर हरी चटनी, टमाटर, ककड़ी डाल कर खायें।

छठे दिन का आहार– सब्जियों को उबाल कर या कच्ची या छोंक कर खायें व १०० ग्राम पनीर भी साथ मे लें।

सातवें दिन का आहार– सभी फलों का रस या चावल के साथ सभी प्रकार की सब्जियाँ मिला कर खायें। चाय व दूध न लें लेकिन जलजीरा, नीम्बू+शहद का पानी, सूप या जूस पी सकते हैं।

विशेष-: (क) सातों दिन एक गिलास नीम्बू+शहद का पानी प्रातः उठते ही अवश्य लें तथा किसी भी प्रकार के डेयरी प्रोडक्ट का सेवन न करें।

(ख) इस डाइट–चार्ट की शुरुआत करने से पूर्व हर सप्ताह अपना वजन और बी.एम.आई. नोट कर लें।

(ग) ब्लड प्रेशर, ब्लड शुगर, डायबटीज मेलाटाइज के मरीज डाक्टर से परामर्श करते डाईट चार्ट की शुरुआत करें।

शुभ सूचना ओ३म् शुभ सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

सत्यार्थ प्रकाश

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित अद्भुत और अनुपम कालजयी ग्रन्थ

1100/– रुपये में उपलब्ध है

सत्यार्थ प्रकाश बड़े साईज में उपलब्ध

हिन्दी के एक बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ छोटे साईज का अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश मुफ्त में उपलब्ध है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा लिखित कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को आप अपने आर्य समाज, स्कूल, कॉलेज में रखें तथा इष्ट मित्रों एवं नव-दम्पत्तियों को भेंट करके पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

बड़े साईज का सत्यार्थ प्रकाश बढ़िया कागज तथा सुन्दर बाईंडिंग के साथ तैयार कराया गया है जिसे बिना चश्मे के भी पढ़ा जा सकता है।

हिन्दी के बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ जो अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश दिया जा रहा है वह भी सुन्दर कागज तथा आकर्ष बाईंडिंग में तैयार कराया गया है

20X30 का चौथा साईज

उपरोक्त पुस्तक को मंगाने के लिए नीचे दिये गये दूरभाष नम्बर तथा ई–मेल आई.डी. पर बुक कराकर मंगा सकते हैं। डाक से मंगाने पर डाक व्यय का अतिरिक्त खर्च देना होगा।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

दूरभाष – 011–23274771, 011–42415359, मो.:–9868211979, 8218863689

ई-मेल : ***sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in***

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
दूरभाष : 011-23274771, 42415359

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

स्वामी इन्द्रवेश जी की 18वीं पुण्यतिथि के अवसर स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में

युवा निर्माण शिविर का आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न

चरित्रवान युवा ही राष्ट्र की उन्नति का आधार –स्वामी आर्यवेश

मूर्ति पूजा के कारण ही देश गुलाम हुआ था – बिरजानन्द एडवोकेट

जातिवाद और साम्प्रदायिकता मुक्त समाज से ही सामाजिक सद्भाव बढ़ेगा –स्वामी आदित्यवेश

बहनों के सम्मान का संकल्प लें युवा –बहन पूनम आर्या

युवा चरित्र निर्माण शिविर युवाओं के जीवन की नई शुरुआत –बहन प्रवेश आर्या

वैदिक विचारधारा को अपनाएं युवा –अशोक आर्य

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा द्वारा आयोजित पांच दिवसीय 13 से 17 जून, 2024 तक प्रांतीय युवा निर्माण शिविर 17 जून, 2024 को भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा एवं युवा निर्माण अभियान के संयुक्त तत्वावधन में स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ टिटौली में युवा चरित्र निर्माण शिविर का उद्घाटन सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने किया। इस अवसर पर बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महासचिव स्वामी आदित्यवेश, युवती परिषद की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन प्रवेश आर्या, वैदिक विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, कुण्डू खाप के राष्ट्रीय संयोजक श्री वीरेंद्र कुण्डू, परिषद् के प्रदेश संगठन मंत्री श्री जगफूल सिंह ढिल्लों, राष्ट्रीय व्यायामाचार्य आचार्य सहसरपाल आर्य, आर्य युवक परिषद दिल्ली के प्रधान श्री उत्तम आर्य, उप प्रधान श्री अजयपाल आर्य, श्री वीरेंद्र खटकड़, श्री रजनेश कुण्डू, श्री महासिंह, श्री जिले सिंह, श्री दिलबाग, श्री सचिन आर्य, श्री साहिल आर्य, श्री बंटी आर्य मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि चरित्रवान युवा ही राष्ट्रीय उन्नति का आधार हैं। आर्य समाज प्रारम्भ से ही युवाओं के सर्वांगीण विकास के लिए कार्यक्रम आयोजित करता रहा है। अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए सम्मान की भावना पैदा करने का प्रयास निरंतर चलाता रहा है। उन्होंने कहा कि पूरे देश में आर्य समाज के युवा संगठन दिसम्बर तक एक लाख युवाओं को आर्य समाज में दीक्षित करने का प्रयास करें तथा युवा निर्माण अभियान के तहत उनको आर्य समाज तथा वेद की प्राथमिक जानकारी देने का कार्य करें। स्वामी जी ने कहा कि कोई व्यक्ति जन्म से नहीं, बल्कि अपने कर्म से बड़ा होता है। आज समाज में किसी व्यक्ति को जन्म के आधार पर छोटा बड़ा माना जाता है। जिसका परिणाम है कि समाज का आपसी ताना बाना कमजोर होता जा रहा है। समाज को मजबूत एवं सशक्त बनाने के लिए कर्मों के आधार पर व्यक्ति का मूल्यांकन होना चाहिए। समाज में फैले जातिवाद, सांप्रदायिकता को एक झटके से खत्म करना पड़ेगा, तभी एक आदर्श समाज की स्थापना होगी। आज के समय में जातिवाद सांप्रदायिकता देश के लिए सबसे बड़ी चुनौती है।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद एवं युवा निर्माण अभियान के संयुक्त तत्वावधन में आयोजित युवा चरित्र निर्माण शिविर में आज युवाओं ने योग के कठिन अभ्यास के साथ साधना के गुरु सीखे। स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ टिटौली में संचालित शिविर के दूसरे दिन परिषद् के राष्ट्रीय व्यायाम शिक्षक सहसरपाल आर्य ने सुबह चार बजे से बच्चों की साधना तथा योगासन की कक्षा प्रारम्भ की। उसके बाद सर्वांग सुन्दर व्यायाम करवाकर संन्ध्या तथा यज्ञ का प्रशिक्षण दिया गया।

शिविर में मुख्य वक्ता सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री स्वामी आदित्यवेश जी ने युवाओं को सम्बोधित करते हुए कहा की आज समाज में सामाजिक सद्भाव कि भावना को बढ़ाने की आवश्यकता है। देश में कुछ लोग जातिवाद तथा साम्प्रदायिकता का जहर फैलाकर सामाजिक ताने–बाने को तोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। लेकिन आर्य युवकों की यह जिम्मेदारी बनती है कि वह समाज में जातिवाद तथा सम्प्रदायिकता के नाम पर लोगों की संकीर्ण भावनाओं तथा मनसूबों का मुहतोड़ जवाब दें।

परिषद के प्रदेश संगठन मंत्री श्री जगफूल सिंह ढिल्लों ने कहा कि युवक परिषद् आगामी दिनों में एक सौ युवा निर्माण शिविरों का आयोजन करेगा। ग्राम स्तरीय युवा निर्माण शिविरो में युवाओं को नशामुक्ति, बेटी बचाओ, राष्ट्र रक्षा का संकल्प दिलवाया जायेगा।

युवा निर्माण शिविर में तीसरे दिन मौलिक अध्यापक संघ हरियाणा के महासचिव तथा आर्य युवक परिषद के प्रदेश महामंत्री श्री अशोक आर्य ने कहा कि युवाओं को वैदिक विचारधारा अपनानी चाहिए, क्योंकि इसके द्वारा ही समाज में फैले वैमनस्य को समाप्त कर आपसी भाईचारा सामाजिक सौहार्द स्थापित किया जा सकता है। वैदिक विचारधारा मानव मात्र के लिए है। उसमें कहीं भी जाति, धर्म, सम्प्रदाय के नाम पर संकीर्णता नहीं है।

सार्वदेशिक आर्य युवती परिषद की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन प्रवेश आर्या जी ने कहा कि जिस प्रकार अग्नि का धर्म जलाना होता है, पानी का धर्म शीतलता होता है उसी प्रकार मानव का धर्म मानवता होता है। आज मानवता के गुणों को जीवन में धारण करके उसे व्यवहारिक जीवन में परिवर्तित करने की आवश्यकता है।

मुख्य व्यायामाचार्य श्री सहसरपाल आर्य ने कहा की योग को अपने जीवन में अपनाने के बाद व्यक्ति कभी असफल नहीं हो सकता है। इस अवसर पर श्री उत्तम आर्य, शिविर के निदेशक श्री सज्जन सिंह राठी, उप प्रधान श्री प्रदीप, श्री अजीतपाल, श्री जगफूल सिंह ढिल्लों, श्री रजनेश कुण्डू आदि ने भी अपने–अपने विचार रखे। कार्यक्रम के दौरान प्रांतीय कोषाध्यक्ष श्री अजय आर्य, श्री हरपाल आर्य, डॉ. रामबीर फौगाट, श्री राजबीर वशिष्ठ, डॉ. नारायण, श्री जयपाल आर्य, श्री सुरेंद्र आर्य, श्री सत्यवीर आर्य, श्री गुलाब सिंह, डॉ. श्यामदेव आचार्य आदि उपस्थित रहे।

इस पांच दिवसीय शिविर में आचार्य सहसरपाल के निर्देशन में योगासन, सर्वांगसुंदर व्यायाम, जूडो–कराटे, स्तूप निर्माण, लाठी चलाना, प्राचीन भारतीय खेल आदि का प्रशिक्षण दिया गया। शिविर के मुख्य आचार्य सहसरपाल आर्य, प्रदीप कुमार, अनिल सिंह, ऋषिराज शास्त्री, साहिल आर्य, राजेश आर्य, अजय आर्य, अजीतपाल आर्य आदि की उपस्थिति बनी रही।

शिविर के दौरान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अधिकारियों ने आगन्तुक अतिथियों का महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का चित्र भेंट करके सम्मान किया।

समापन सत्र के दौरान व्यायाम प्रदर्शन का संचालन परिषद् के राष्ट्रीय व्यायमाचार्य सहसरपाल आर्य ने किया। उनका सहयोग सचिन आर्य, उत्तम आर्य ने किया। बच्चों ने कठिन आसान, जूडो, तथा कमांडो आदि का भव्य प्रदर्शन किया।

प्रांतीय युवा चरित्र निर्माण एवं योग शिविर का 17 जून, 2024 को स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली, रोहतक में भव्यता के साथ समापन हुआ।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771, 42415359)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।